हिन्दी

(स्पर्श) (पाठ 12)(सियारामशरण गुप्त– एक फूल की चाह)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1 :
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(क).
(क,)
कविता की उन पंक्तियों को लिखिए, जिनसे निम्नलिखित अर्थ का बोध होता है

1 सुखिया के बाहर जाने पर पिता का हृदय काँप उठता था।

बहुत रोकता था सुखिया को,
न जा खेलने को बाहर',
नहीं खेलना रुकता उसका
नहीं ठहरती वह पल–भर।

2 पर्वत की चोटी पर स्थित मंदिर की अनुपम शोभा।

ऊँचे शैल–शिखर के ऊपर
मंदिर था विस्तीर्ण विशाल
स्वर्ण–कलश सरसिज विहसित थे
पाकर समुदित रवि–कर–जाल। ;

3 पुजारी से प्रसाद/फूल पाने पर सुखिया के पिता की मनःस्थिति।

भूल गया उसका लेना झट,
परम लाभ–सा पाकर मैं।
सोचा! बेटी को माँ के
ये पुण्य–पुष्प दूँ जाकर मैं। ;

4 पिता की वेदना और उसका पश्चाताप।

अंतिम बार गोद में बेटी,
तुझको ले न सका मैं हा!
एक फूल माँ का प्रसाद भी
तुझको दे न सका मैं हा!

(ख).

बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की ?

उत्तर ख :

बीमार बच्ची ने देवी मॉं के चरणें के एक फूल की प्रसाद रूप में इच्छा प्रकट की ।

(ग).

सुखिया के पिता पर कौन–सा आरोप लगाकर उसे दंडित किया गया ?

उत्तर ग :

सुखिया के पिता पर यह आरोप लगाया गया कि उसने अछूत होते हुए देवी मॉं के मंदिर में घुसकर मंदिर की पवित्रता को भंग किया है इसलिए उसे दंडित किया गया ।

(घ).

जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को किस रूप में पाया ?

उत्तर घ :

जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने उसे राख की ढेरी के रूप में पाया ।

(ङ).

इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर ङ :

कवि के अनुसार इस संसार को बनाने वाला ईश्वर एक ही है । हमने ही आपस में ऊँच–नीच के भेद–भाव पैदा किए हैं । और उसमें हम इतना डूब चुके हैं तिक हमें किसी की मार्मिक भावनाओं तक का ध्यान नहीं रहता । इस पाठ में एक अछूत बच्ची की चाह देवी मॉं के चरणों के एक फूल की थी मगर इस निर्दयी समाज ने उसे भी पूरा न होने दिया और एक पिता के हाथों में उसकी बच्ची राख की ठेरी के रूप में पकड़ा दी ।

(च).

इस कविता में से कुछ भाषिक प्रतीकों/बिंबों को छाँटकर लिखिए !

उदाहरणः अंधकार की छाया

उत्तर च :

(i) हृदय–चिताएँ धधकाकर (ii) जलते–से अंगारों से, (iii) पाकर समुदित रवि–कर–जाल।

(iv) हाय! फूल –सी कोमल बच्ची। (v) चिरकालिक शुचिता सारी।

प्रश्न 2 :
निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट करते हुए उनका अर्थ सौंदर्य बताइए –

(क).
अविश्रांत बरसा करके भी आँखें तनिक नहीं रीतीं
उत्तर क :
बेटी के पिता की आँखें अपनी बेटी की मृत्यु के दुःख में लगातार रो –रोकर भी खाली नहीं हुईं थीं अर्थात एक लाचार पिता इस समाज के कड़े नियम के आगे अपनी बेटी को खोकर लगातार उसकी याद में रो रहा था ।

(ख).
बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर छाती धधक उठी मेरी
उत्तर ख :
एक पिता अंतिम समय में अपनी बेटी को देख भी नहीं पाया उसका अंतिम संस्कार भी न कर सका अपनी बेटी की बुझी चिता को देखकर उसकी छाती में भी दुःख की ज्वाला धधक उठी ।

(ग).
हाय! वही चुपचाप पड़ी थी अटल शांति–सी धारण कर
उत्तर ग :
एक पिता के सामने उसकी बच्ची जो एक पल भी शांत नहीं बैठती थी जिसकी खिखिलाहट से वह पिता रोमांचित होता था आज वही बच्ची बीमार होकर अटल शांति को धारण किए हए् पड़ी हुई थी ।

(घ).
पापी ने मंदिर में घुसकर किया अनर्थ बड़ा भारी
उत्तर घ :
बीमार बच्ची का पिता अपनी बेटी की इच्छा पूरी करनें के लिए मॅां के चरणों का फूल लेने मंदिर में गया था। उसका दोष केवल इतना ही था कि वह अछूत था जिसके कारण उसके कृत्य को अनर्थ माना गया मंदिर को अपवित्र करने का दोषी ठहराया गया ।